(UGC Care List) **ISSN : 0974-0053**

उन्मीलन

Vol. 33, Issue-09 (June, 2022)

(A Multidisciplinary Refereed Research Journal)

प्रधान संपादक

यशदेव शल्य : मुकुन्द लाठ

संपादक

अम्बिकादत्त शर्मा

दर्शन प्रतिष्ठान

जयपुर

- **अनूठी पहल : श्री मांगेराम चौहान (पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में)** 105–114

  प्रो० आराधना

  दीपक शर्मा

- **बैतूल जिले में भारत छोड़ो आंदोलन एवं स्वाधीनता सेनानी विष्णुसिंह का योगदान** 115–118

  डॉ. संकेत कुमार चौकसे

- **भारतीय कला में बंगाल स्कूल द्वारा राष्ट्रवाद का उदय–अवनीन्द्रनाथ टैगोर** 119–125

  शेरिल गुप्ता

- **पूर्व मध्यकालीन गाहड़वाल शासकों की मुद्राएँ तथा उनका ऐतिहासिक विवेचन** 126–129

  राजेन्द्र प्रसाद मौर्य

- **झुग्गी बस्तियों में रसोई ईंधन के उपयोग का अध्ययन : भोपाल नगर के संदर्भ में** 130–137

  नमिता सेन

  प्रो0 विजय कुमार सिंह

- **पंजाब में स्वतंत्रता आंदोलन की गतिविधियाँ : एक समग्र अध्ययन** 138–144

- मनीषा
  गुरविन्दर कौर

पंजाब में स्वतंत्रता आंदोलन की गतिविधियाँ : एक समग्र अध्ययन

मनीषा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, गुरुनानक गर्ल्स कॉलेज, संतपुरा, यमुनानगर, हरियाणा
गुरविन्दर कौर
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, गुरुनानक गर्ल्स कॉलेज, संतपुरा, यमुनानगर, हरियाणा

पंजाब में स्वतंत्रता आन्दोलन कैसे आरम्भ हुआ, उस पर सहारनपुर के बंगाली प्रवासी जोतीन्द्र मोहन चटर्जी की आत्मकथा से एक दिलचस्प रोशनी पड़ती है। चटर्जी और कुछ नौजवानों ने मिलकर 1904 ई0 में एक गुप्त सोसाइटी बनाई थी। उन्होंने सहारनपुर, जिले की धमोला नामक नदी के किनारे प्रतिज्ञा की थी कि वे देश की स्वाधीनता के लिए अपना जीवन बलिदान कर देंगे। उनकी योजना और तरीके वही थे जो महाराष्ट्र और बंगाल के क्रान्तिकारियों के थे। वे शीर्घ ही अपना सदर दफ्तर रुड़की ले गये और खासकर इंजीनियरिंग कालेज के छात्रों को अपने साथ मिलाने का प्रयास किया। जिसमें उन्हें सफलता भी मिली। शीघ्र ही उनके साथ लाला हरदपाल अजीत सिंह और सूफी अम्बा प्रसाद आ मिले। बंग–भंग के बाद पंजाब के क्रान्तिकारियों की गतिविधियों में भी सरगर्मी आयी। ये क्रान्तिकारी सतीशचन्द्र घोष, चन्द्रकान्त आदि के माध्यम से बंगाल के क्रान्तिकारियों के साथ घनिष्ट सम्पर्क रखते थे और लाला के नेतृत्व में काम करते थे।[1]

मई 1907 ई0 में 1857 के स्वाधीनता संग्राम की अर्द्वशताब्दी थी। वक्ताओं के भाषणों में अकसर 1857 के स्वाधीनता संग्राम का जिक्र आता है। वे विशेषकर सिक्णों को सम्बोधित करते हुए कहते थे कि ''आपने सन् सत्तावन (1857) में अंग्रेजों का राज बचाया था। आज वही अंग्रेज आपको तबाह कर रहे है। आजादी की लड़ाई में शामिल न होने का पुरस्कार आपको मिल रहा है।'' उस वक्त की हालत का आभास वायसराय लार्ड मिन्टो द्वारा 8 मई 1907 ई0 को भारत सचिव को भैजे गये एक तार से मिलता है। जिसमें कहा गया था ''तीन दिन पहले पंजास की वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति के बारे में इबेटशन की बजनदार और जरूरी रिपोर्ट मिली।..... वह जो हालात बताते हैं उससे बड़ी आशंका पैदा होती है। हर जगह खुले आम अति उग्रवादी राजद्रोह का प्रचार करते हैं। यह काम समाचार पत्रों और बड़ी–बड़ी सभाओं दोनों के माध्यम से किया जाता था।

लाहौर, अमृतसर, रावलपिंडी, फिरोजपुर, मुल्तान और अन्य स्थानों में उसने खुलकर उच्च सरकारी अधिकारियों की हत्या करने को कहा है। उसने जनता का आह्वान किया है कि वह बगावत अंग्रेजों पर हमला करें और आजाद हो जाये। देहात में उन किसानों को भ्रष्ट करने की कोशिश बराबर की जाती है जिन्हें फौज में भर्ती किया जाता है। सिक्णों और पेंशन पाने वाले फौजियों पर खास ध्यान दिया जाता है। सिक्खों के गाँवों में राजद्रोहात्मक पर्चे बाँटे जाते है। फिरोजपुर की एक सार्वजनिक सभा में जहाँ नफरत का धुला प्रचार किया गया, वहाँ स्थित सिक्ख रेजीमेन्टों के सिपाहियों को सभा में आने के लिए निमंत्रित किया गया था। फलस्वरूप कई सौ सिपाही गये भी थे।..... देशी सैनिकों और पुलिस वालों को गद्दार कहा जाता है और सरकारी नौकरी छोड़ देने के लिए उनसे अनुरोध किया जाता है। यह कार्य आर्य समाज की एक गुप्त कमेटी संगठित और संचालित करती थी। आर्य समाज जो पहले एक धार्मिक संस्था थी, पंजाब में राजनीति की तरफ बहुत रुझान है।[2] यह सच है कि पंजाब में आर्य समाज के अनेक कार्यकर्ता क्रान्तिकारी और आंतकवादी आन्दोलन में शामिलक हुए। इसलिए सरकार का विचार था कि आर्य समाज ही कोई गुप्त कमेटी इस आन्दोलन को चला रही है। आर्य समाज को सरकारी कोपभाजन से बचाने के लिए उसके नेताओं ने होसियारी से काम लिया और लाला लाजपत राय की गिरफ्तारी के बाद पंजाब आर्य समाज के अध्यक्ष लाला हंसराज ने 22 मई 1907 ई0 को गवर्नर डेंजिल इबेटसन से मुलाकात कर यह आश्वासन दिया कि आर्य समाज की राजनीति और उस वक्त की घटनाओं से कोई सम्बन्ध नहीं है। उसका लक्ष्य तो केवल धर्म और

शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना है। मुलाकात के बाद पंजाब के समाचार पत्रों के छपने के लिए हंसराज ने आर्य समाज की ओर से 27 मई को पत्र भेजा जिसमें स्पष्ट शब्दों में घोषणा कर गयी थी कि किसी भी राजनीतिक संस्थान या राजनीतिक आन्दोलन से आर्य समाज का कोई सम्बन्ध नहीं है।

सरकार लाला लाजपतराय को सम्पूर्ण क्रान्तिकारी आन्दोलन का मस्तिष्क और अजीत सिंह को उनका दाहिना हाथ समझती थी। इसलिए उन दोषों को गिरफ्तार करने और मॉडले जेल ले जाकर नजरबन्द करने के वारंट 7 मई 1907 ई0 को जारी किये गये। लाला लाजपत राय को 9 मई को लाहौर में अपने घर से गिरफ्तार किया गया किन्तु अजीत सिंह फरार हो गये। उन्हें 2 जू 1907 ई0 को अमृतसर में गिरफ्तार किया गया। उसी साल नवम्बर में वह मॉडले से वापस लाहौर लाये गये और रिहा कर दिये गये।[3] 1909 ई0 में फिर से पंजाब में क्रान्तिकारियों के कामों में हलचल देखी जाने लगी। लाहौर में बहुत सी पुस्तक– पुस्तिकाएँ प्रकाशित हुई थी जो क्रान्तिकारी सिद्धान्तों की जिम्मेदारी मुख्यतः लालचन्द फलक अजीत सिंह और उनके दो भाई किशन सिंह एवं सोवरन सिंह तथा अम्बा प्रसाद पर भी।

नवम्बर 1909 ई0 में उपर्युक्त पाँचों व्यक्तियों के खिलाफ सरकार ने कार्यवाही की लेकिन अतीत सिंह और अम्बा प्रसाद हो गये तथा वे फारस चले गये। सोवरन सिंह बीमार थे, इसलिए उनके ऊपर से मुकदमा हटा लिया गया। लालचन्द फल को चार साल की और किशन सिंह को दस महीने की सजा दी गयी। नन्दगोपाल नामक एक अन्य व्यक्ति की राजद्रोही पुस्तक ''कौमी दूसला है निकालने के कारण उसी समय पाँच साल की कालापानी का सूजा दी गयी। पेशवों में एक लेख के लिए जियाउल, हक को पाँच साल के कालापानी की सजा दी गयी। 'बेदारी' में एक लेख के लिए ईश्वरी प्रसाद को तीन साल के कारावास की ओर 'सहायक' में एक लेख के लिए मुंशी रामसेवक को सात साल की कालेपानी की सजा 1910 ई0 में दी गयी।

नवम्बर 1909 ई0 में जब अजीत सिंह की ''भारत माता बुक एजेन्सी'' की तलाशी ली गयी, तो उस समय वहाँ भाई वैदिक कालेज' के प्राध्यापक थे। तलाशी के दौरान, उनके सन्दूक में बंग बनाने की पुस्तिका और क्रान्तिकारी योजनाओं के कुछ कागजात पाये गये थे। इनमें लाला लाजपतराय के कुछ पत्र भी थे। ..... एक पत्र में लाला लाजपत राय ने आशंका प्रकट की थी कि पंजाब में विद्रोह कहीं तैयारी से पहले न हो जाय। इन कागजातों के कारण भाई परमानन्द को अप्रैल 1910 ई0 में तीन साल की सजा दी गयी।

लाला हरदपाल अगस्त, 1908 ई0 में भारत छोड़कर यूरोप चले गये और अपने क्रान्तिकारी गुट का नेतृत्व दिल्ली के मास्टर अमीरचन्द के हाथ में सौंप गये थे। हरदयाल दूसरे शिष्य सहारनपुर के जोतीन्द्र मोहन चटर्जी और लाहौर के दीनानाथ थे। ये लोग परस्पर मिलकर काम करते थे। चटर्जी भी जल्दी ही इंग्लैण्ड चले गये और दीनानाथ का सम्पर्क रासबिहारी बोस से करा गये। 1910 में रासबिहारी बोस लाहौर गये और हरदयाल के गुट का नेतृत्व अपने हाथ में ले लिया।[4] हरदयाल विदेशों में रह रहे भारतीयों को संगठित करने के उद्देश्य से जनवरी 1911 ई0 में अमेरिका गये। जहाँ वह अप्रवासियों को संगठित करके भारत को आजाद कराने के लिए प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान भारत में सशस्त्र विद्रोह करने के लिए प्रोत्साहित किया। लाल हरदयाल को इस क्षेत्र में सफलता भी मिली। जिसके फलस्वरूप अमेरिका में 1913 ई0 में गदर पार्टी की स्थापना हुई थी। भारत में गदर क्रान्तिकारियों की सरगर्मियों का प्रथम दौर असफल रहा था। किसी भी योजना कके पूरा न होने और कोई एक मुख्य केन्द्र न होने के कारण क्रान्तिकारियों में निराशा–सी फैल गयी। पहले दौर की असफलता के पीछे दो बड़े कारण थे, सही संगठन न होना तथा हथियारों का नितान्त अभाव था।[5] इसके अलावा एक अन्य कारण इन क्रान्तिकारियों में गोपनीयता का अभाव भी था।

गदरी क्रान्तिकारियों की सरगर्मियों का दूसरा दौर बंगाल के क्रान्तिकारियों के साथ तालमेल से आरम्भ होता है। यह बात अमेरिका से चलते समय ही निश्चित हो गयी थी कि भारत जाकर सबसे पहले बंगाल के उन क्रान्तिकारियों से सम्पर्क स्थापित करना होगा जो

अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष में सक्रिय है। सोहन सिंह भखना अमेरिका से इसी उद्देश्य को लेकर चले थे पर दुर्भाग्यवंश जहाज से उतरते ही वह गिरफ्तार कर लिये गये। बंगाली क्रान्तिकारियों के साथ ताल–मेल स्थापित करने में करतार सिंह सराबा ने अपनी कम उम्र होने पर भी बहुत बड़ा काम किया। वह भाई परमानन्द की चिट्ठी और दो हजार रूपये लेकर कलकत्ता के किसी क्रान्तिकारी के पास से हथियार लेने गये, पर वहाँ उन्हें सफलता न मिली। जान पहचान न होने के कारण उन्हें सी0आई0डी0 का आदमी समझा गया।[6] आगे चलकर गदरी और बंगाली क्रान्तिकारियों के बीच ताल–मेल कायम करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका शचीन्द्र नाथ सान्याल ने अदा की। शचीन्द्रनाथ सान्याल की प्रसिद्ध पुस्तक ''बन्दी–जीवन'' से उनकी इस भूमिका पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। उन्होंने लिखा है– ''पंजाब दल का एक आदमी गदर की तैयारी का समाचार लेकर हमारे पास आया। जब हमने यह सुना कि दो तीन हजार सिक्ख गदर के लिए तैयार बैठे है, तो हमें असीम आनन्द हुआ। पंजाब दल के नेताओं ने यह कहला भेजा कि हमें रासबिहारी बोस के नेतृत्व की जरूरत है। दिल्ली षड्यन्त्र के फरार प्रसिद्ध क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस का नाम इस समय अमेरिका तक प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका था। कई कारणों से रासबिहारी बोस उस समय पंजाब न जा सके, इसलिए पहले वहाँ पर मेरा (शचीन्द्र नाथ सान्याल) भेजा जाना तय हुआ ताकि अपनी आँखों से वहाँ की स्थिति को देखकर रिपोर्ट दे सकूँ।''[7] शचीन्द्र ने आगे लिखा है कि पंजाब पहुँचकर जब मैंने गदरी क्रान्तिकारियों से पूछा कि वे कितने लोग है, आपस में किस प्रकार मिलते–जुलते है और उनका वास्तविक नेता कौन है, इत्यादि। तो अमरसिंह ने कहा सच पूछिये तो हम लोगों में वास्तविक नेता की कमी है और इसलिए हमें रासबिहारी की जरूरत है। यहाँ पर हम जितने आदमी मौजूद है, इनमें से किसी को विशेष अभिज्ञता प्राप्त नहीं है।..... करता सिंह ने भी इसे माना, किन्तु अमर सिंह को लक्ष्य करके कहा ''देखों भाइयों हिम्मत क्यों हारते हो? काम के वक्त देख लेना कि तुम्ही में से कितने छिपे रुस्तम निकलेंगे।[8]

शचीन्द्रनाथ सान्याल के पंजाब से लौटने के बाद रासबिहारी बोस अपने साथ पिंगले को लेकर जनवरी के मध्य अमृतसर पहुँचे। वह पिंगले को अपना लेफ्टीनेण्ट बनाकर लाये थे। रौलट रिपोर्ट और पंजाब पुलिस के रिकार्ड के अनुसार पंजाब में गदरी क्रान्तिकारियों की सरगर्मियों का नेतृत्व रास बिहारी बोस ने संभाल लिया। अब गदरी क्रान्तिकारियों की कार्यवाही योजना के अनुसार एक केन्द्र से संचालित होने लगी।[9] पन्द्रह–सोलह दिन अमृतसर में रहने के बाद रास बिहारी बोस अपना केन्द्र लाहौर ले गये, जहाँ चार घर एक मौची गेट के बाहर, दूसरा गवाल मण्डली में, तीसरा बढोवाली और चौथा गुमटी बाजार में किराये पर लिये गये। गदर पार्टी के क्रान्तिकारी सिपाहियों में लगन, त्याग और देश की बलिवेदी पर कुर्बान हो जाने की अदम्य भावना की कोई कमी नहीं थी कभी थी सिर्फ संगठन की थी। राजबिहारी बोस के पंजाब में आकर गदर नेतृत्व संभाल लेने से इस महान क्रान्तिकारी आन्दोलन का स्वरूप ही बदल गया। गदर आन्दोलन में विद्यार्थियों को शामिल करने के लिए कई प्रयत्न किये गये। विद्यार्थियों के अलावा क्रान्तिकारियों ने ग्रामीण जनता को अपने साथ मिलाने के लिए भी आन्दोलन किया। क्रान्तिकारी खुले तौर पर गाँवों में घूम–घूमकर गदर का प्रचार करते रहे। नवम्बर में पंजाब सरकार ने भारत सरकार को रिपोर्ट दी कि विदेशों से लौटे आदमी गाँवों में घूमकर खतरनाक या भड़काने वाली बाते करते है।[10]

गदरी क्रान्तिकारियों ने हथियार जुटाने के विशेष प्रयत्न कनाडा और अमेरिका में देश वापसी के समय मार्ग में पड़ने वाले देशों और भारत में आकर बंगाल और सीमा प्रान्त में किये गये, पर उन्हें कोई सफलता नहीं मिली।

हथियारों की ओर से निराश होकर क्रान्तिकारियों ने बम बनाने की ओर ध्यान दिया। 31 दिसम्बर 1914 ई0 को बहुत से क्रान्तिकारी अमृतसर की बिरयाली की धर्मशाला में जमा हुए। डॉ0 मथुरा सिंह ने बताया कि उन्हें बम बनाने का नुक्खा आता है। तब एक पीतल की दवात मँगाई गयी। मथुरा सिंह ने उसमें मसाला भर दिया। परमानन्द और मूलासिंह एवं उनके साथियों ने नहर के किनारे उस बम को चलाया, जो सफल रहा। तत्पश्चात गदरी

क्रान्तिकारियों ने लुधियाना के पास झाबेवाल गाँव में और इसके बाद यहाँ से हटाकर दाभा स्टेट के लोहारबदी गाँव में बम फैक्टरी स्थापित की गयी।

सबसे महत्वपूर्ण और खतरनाक कदम जो गदरी क्रान्तिकारियों ने उठाया था, वह था। सेनाओं को गदर के लिए भड़काना और उनके दिल में अंग्रेजी राज्य के विरूद्ध घृणा पैदा करना। इनके मुख्य नमे थे– ''..... जाओ, फौजी को जगाओं! तलवार के धनी सोये क्यों पड़े हो?..... तुम गोरों के स्थान पर जाकर लड़ते हो..... दूसरे देशों पर आक्रमण करते हो, तुम अपने देश को अपने चार्ज में क्यों नहीं ले लेते?..... ऐ फौज के सिपाहिओ! क्या तुम्हारा भारतीयों से कोई सम्बन्ध नहीं है?..... क्या तुमने अंग्रेजों के पराधीन बने रहने की सौगन्ध उठा रखी है?..... क्या तुम्हारी जिन्दगी का मूल्य नौ रूपये है?..... तुम एक क्षण में अंग्रेजों का बीज नाश कर सकते हो।..... ऐ बहादुरों तुम कितनी देर तक गुलाम रहोगे? उठो अपने आपको कुर्बान कर दो।[11] अमेरिका से चलकर गदरी क्रान्तिकारियों का रास्ते में जहाँ भी पड़ाव पड़ा, वे फौज में विद्रोह का प्रचार करते आये। लहना सिंह और सरदार सिंह की शंधाई की फौजों में विद्रोह के लिए नियुक्त किया गया। जनवरी के अन्त में हिरदेराम को वहाँ की फौजों के इरादो का पता लगाने के लिए जालन्धर भेजा गया। उसने थोड़े दिनों के बाद वापस लौटकर बताया कि डोगरे तथा दूसरे सिपाही शामिल होने के लिए तैयार है। हीरा सिंह 'चर्ड' ने जकबाबाद की फौजों को भड़काने की कोशिश की और दिसम्बर में प्यारा सिंह सेनाओं में विद्रोह फैलाने के लिए को हार गये। इसके अलावा सरनाम सिंह और संत गुलाब सिंह को बन्नू भेजा गया। उन्होंने आकर रिपोर्ट दी कि पैतीसवीं सिख पलटन ने उस समय गदर में शामिल होन का बचन दिया है जबकि बाद में उसका तबादला रावलपिण्ड हो जायेगा।

मूला सिंह ने निधान सिंह को रावलपिण्डी भेजा था। 8 या 9 फरवरी के करीब रावलपिण्डी से यह खबर आयी कि जेहलम, रावलपिण्डी, होतीभरदान और पेशावर की सेनाएँ विद्रोह करने के लिए तैयार है। वे निश्चित तारीख का इंतजार कर रही है। 2 फरवरी के करीब सुच्चा सिंह और करतार सिंह सराबा मेरठ गये जहाँ उन्हें पिंगले भी आकर मिल गये। मेरठ में उन्हें पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई। 4 फरवरी 1915 ई0 को वे तीनों मेरठ से आगरा आये। वहाँ (आगरा में) कोई सिक्ख पलटन न होने के कारण एक प्यादा पलटन की बैरकों में गये। फौजी सिपाहियों ने पहले तो उत्साह दिखाया परप बाद में डर कर अपने बचन से मुकर गये। 6 फरवरी को वे इलाहाबाद गये जहाँ रिसाले और पैदल सेनाएँ दोनों से मिले। रिसाले में सफलता नहीं मिली, पर पैदल फौज के एक हवलदार का सहयोग मिल गया। उसी दिन वे बनारस गये। दानापुर में तैनात एक सिक्ख पलटन से मिलने की बात सोची गयी। करतार सिंह अपने एक बंगाली मित्र को लेकर छावनी में गये। बनारस से सुच्चा सिंह को फैजाबाद भेजा गया। फैजाबाद में एक हवलदार सहयोग देने के लिए मान गया। फैजाबाद से होकर सुच्चा सिंह करतार सिंह और पिंगले लखनऊ में आ मिले। करतार सिंह लखनऊ में सोलवें रिसाले की बैरको में गये। पता चला कि रिसाला लड़ाई की जा चुका है। 10 फरवरी को सुच्चा सिंह एक पैदल रेजीमेण्ट के क्वार्टर गार्ड में गया, पर वह वहाँ से निकाल दिया गया।

11 फरवरी 1915 को सुच्चा सिंह ने रासबिहारी बोस को आकर रिपोर्ट दी तत्पश्चात उसे 15 फरवरी को अम्बाला छावनी में भेजा गया, जहाँ उसे एक फौजी क्लई का सहयोग मिला। पंजाब में मियाँमीर और फिरोजपुर छावनी में फौजियों के बीच जो काम हुआ उसका एक विशेष महत्व है, क्योंकि होने वाले गदर की यही दो छावनियाँ केन्द्र बनने वाली थी।

रासबिहारी बांस के पंजाब आने के बाद भी मियाँमीर के तेईसवें रिसाले के साथ बाकायदा मेल–मिलाप जारी रखाा रिसाले में भरती हुए थे। मूलासिंह स्वयं मियाँमीर गया। उसने रामबिहारी के आगे एक सुझाव रखा कि मियाँवीर की मुस्लिम पलटनों में काम करने के लिए मुसलमान क्रान्तिकारियों को भेजा जाएँ मियाँमीर की पलटनों में हुए काम की रिपोर्ट सुनकर रासबिहारी बोस ने सम्पूर्ण भारत में गदर करने की तारीख 21 फरवरी 1915 ई0 को निश्चित की गयी।

फौजो में घुसकर काम करने के सम्बन्ध में शचीन्द्रनाथ सान्याल ने लिखा है ''जिन निर्भीकता और लगन से करतार सिंह सराबा और सुच्चा सिंह ने फौजों में जो काम किया, उसे देखकर कोई भी व्यक्ति उस समय के इन दो सबसे छोटे क्रान्तिकारियों के आगे नत–मस्तक हुए बिना नही रह सकता।''[12] गदर की तारीख निश्चित होने पर अलग–अलग छावनियों में सूचना देने के लिए क्रान्तिकारियों को फिर भेजा गया। मियाँमीर छावनी के सैनिकों द्वारा गदर करने की खबर सुनकर सारे देश की सेनाओं को गदर आरम्भ करना था। ग्रामीण लोगों के जत्थों को लाहौर में शामिल होने के लिए इकट्ठे करने का प्रबन्ध किया गया।

जेहलम, रावलपिण्डी और सीमा प्रान्त में सेनाओं को सूचना देने और तैयार करने के लिए निधान सिंह और डॉ0 मथुरा सिंह को भेजा गया। गुरुमुणसिंह 'ललतो' और हरनाम सिंह को रावलपिण्डी, जेहलम और होती मरदान की पलटनों को तैयार करने के लिए भेजा गया। अम्बाला और यू0पी0 का प्रबन्ध रासबिहारी बोस ने स्वयं अपने जिम्मे लिया था। संत विसाख सिंह को दिल्ली जाना था। मियाँमीर के अलावा गदर का आरम्भ फिरोजपुर छावनी से होना था इसलिए इस अहम केन्द्र का प्रबन्ध करतार सिंह के सुपुर्द किया गया था।.....14 फरवरी को मनीलाल और विनायक राव कापले बनारस से 18 बमों का मसाला लेकार लाहौर आये। राम बिहारी बोस ने मनीलाल को गदर की निश्चित तारीख के सम्बन्ध में बताया। इस प्रकार गदर की तारीख का पता बनारस के क्रान्तिकारियों को हो गया था।

सेनाओं को सूचना देने तथा तैयार करने के लिए अतिरिक्त बम बनाये गये। हथियार जमा किये गये। 21 फरवरी 1915 के गदर के लिए जितना शीघ्र हो सकता था तैयारी की गयी। मियाँमीर की छावनी में 6–7 क्रान्तिकारियों की एक टोली को बैरकों में उस समय ले जाया जा रहा था, जिस समय फैजियों की हाजिरी लगती है। क्रान्तिकारियों की इस टोली को फौजियों की तलवारे कब्जे में लेनी थी। एक अन्य गाइड को क्रान्तिकारियों की एक दूसरी टोली को रिजर्व फौजियों की क्वार्टर गार्ड में ले जाना था। जहाँ मैगनीज तोड़कर राइफले तथा अन्य हथियार अपने कब्जे में लेने थे। तत्पश्चात रिसाले के सवारों को आकर क्रान्तिकारियों के साथ मिल जाना था और फौजियों तथा क्रान्तिकारियों को आपस मिलकर यूरोपियनों और छावनी के गोरा तोपखाने के आदमियों का करल कर देना था।..... लेकिन क्रान्तिकारियों की इन सारी तैयारियों का उस समय पानी फिर गया, जब एक भेदिये द्वारा इन तैयारियों की जानकारी पुलिस को दे दी।[13] 21 फरवरी के आम विद्रोह की योजना के जाहिर हो जाने के बाद क्रान्तिकारियों ने आम विद्रोह की तारीख बदलकर 19 फरवरी 1915 कर दी गयी।

लाहौर का यह विद्रोह इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि यह अन्य स्थानों में विद्रोह का सिगनल था। लेकिन दुर्भाग्य वश उसी दिन (19 फरवरी 1915 ई0) शाम को 7 बजे अंग्रेज अधिकारियों को इसका पता लग गया। उन्होंने रंगरूटों को छोड़कर सारी रेजीमेण्ट को 'फाल इन' का आदेश दिया और आधी रात तक उनको ट्यूरी पर लगाये रखा। क्रान्तिकारियों के जत्थे छावनी पहुँचे थे लेकिन यह मालूम होने पर कि अधिकारियों को इसका सुराग मिल गया है वहाँ से हर आये। इसी तरह के प्रयास फिरोजपुर तथा अन्य छावनियों में भी किये गये।..... लेकिन वहाँ भी ब्रिटिश अधिकारियों को इसकी खबर मिल गयी थी, अतः वहाँ के भी प्रयास असफल हो गये। लाहौर में 19 फरवरी के आम विद्रोह की योजना को किस तरह असफल बनाया गया, इसका विवरण खुद ब्रिटिश शासकों के गुप्तचर विभाग के अधिकारियों ने दिया है।

दयाल सिंह नाम अपने गुप्तचर को क्रान्तिकारी दल में शामिल कराने में सफल हुए। यह कृपाल सिंह रिमाल के सवार बलवन्त सिंह का रिस्तेदार था। वह कुछ ही दिनों पहले अमेरिका से वापस आया था। वह 15 फरवरी 1915 को लाहौर में क्रान्तिकारियों के सदर दफ्तर मोची फाटक में गया। वहाँ उसने पिंगले और रास बिहारी बोस तथा एक दर्जन से ज्यादा क्रान्तिकारी नेताओं को इकट्ठा उसने क्रान्तिकारी नेताओं को गिरफ्तार कराने के उद्देश्य से पुलिस अधिकारी के पास तार भेजा। लेकिन तार देर से पहुँचा। कृपाल सिंह ने पुलिस अधिकारी को 21 फरवरी के आम विद्रोह की योजना की भी सूनाव दी थी।

16 फरवरी को क्रान्तिकारियों ने कृपाल सिंह को कुछ काम के लिए दधीर भेजा। लेकिन वह लाहौर रेलवे स्टेशन पर देखा गया। बाद में उन्हें उस पर सन्देह हो गया और उन्होंने आम विद्रोह की तारीख बदल कर 19 फरवरी कर दी। उसी दिन सुबह कृपालसिंह को मालूम हुआ कि विद्रोह तो उसी दिन शाम को होने जा रहा है। उसने यह जानकारी पुलिस को दे दी। पुलिस उसे घर जाने अनुकूल अवसर देखकर सिगनल देने को कहा, ताकि क्रान्तिकारी नेताओं को गिरफ्तार किया जा सके। तीसरे पहर उसे मालूम हो गया कि क्रान्तिकारी उस पर संदेह कर रहे है। वह किसी तरह बहाना बनाकर छत पर गया फिर 4:30 बजे के लगभग सिगनल दे दिया। पुलिस फौरन उस पर टुट पड़ी और 7 क्रान्तिकारी को गिरफ्तार कर लिया। इससे क्रान्तिकारियों की सारी योजना मिट्टी में मिल गयी।[14] इसके बाद सम्पूर्ण पंजाब में गिरफ्तारियों का तांता लग गया। गोरी फौज को जहाँ भी संदेह होता वही घेरा डालकर संदिग्ध व्यक्तियों की गिरफ्तार कर लेती। शक्लपिण्डी की एक पंजाबी पलटन को डिसमिस कर दिया गया।

19 फरवरी की असफलता के बावजूद दिलाने में विद्रोह की आग सुलगती रही।..... प्रेमा सिंह ने लगातार रिसाले से सम्पर्क बनाये रखा। कृपाल सिंह भेदिये और भोजन के समय इकट्ठे हुए अंग्रेज अफसरों को बम से उड़ा देने की योजनाएँ बनती रही। इसी उद्देश्य से दो बम बनाये गये। कुछ दिन बाद रिसाले को लर्ड़ा के लिए डिपू भेजा गया। उन दो बमों में से एक बम को पेटी में बन्दकर मालगाड़ी द्वारा भेजा गया। जब हरपालपुर स्टेशन पर समान उतारा जा रहा था तो पेटी में रखा बम फट गया। जिससे कुछ सिपाहियों को संदेह में पकड़ लिया गया। उन्होंने सारा भेद खोल दिया। तेइसवें रिसाले के कई सैनिकों पर डिगवोई में कोर्ट मार्शल किया गया। जिसमें 18 सैनिकों को फाँसी की सजा दी गयी। इनमें से 12 को तो फाँसी पर लटका दिया गया। शेष की सजा आजीवन कारावास में बदल दी गयी। 5 जून 1915 को कई क्रान्तिकारियों ने कपूरथता में एक सभा की। इस सभा में फैसला किया गया कि कपूरथला की मैगजीन लाहौर और भुल्तान की जेलों में बन्द अपने साहिथयों का छुड़ा लिया जाए।..... परिणामस्वरूप 11 जून को बल्ले रेलवे पुल पर रात 1–2 बजे के बीच क्रान्तिकारियों ने फोजी पिकर पर धावा बोला। दो मारे गये। क्रान्तिकारी हथियार छीनने में सफल हो गये। तत्पश्चात वचन सिंह और रुड़सिंह सीधे कपूरथला आ गये बाकी क्रान्तिकारी फैजियों से छीनी गयी राइफलें लेकर दूसरे रास्ते से कपूरथला को चल दिये। लेकिन पुलिस तथा लोगों की भीड़ ने उनका पीछा किया। पीछा करने वाला मल्लाह और एक अन्य व्यक्ति क्रान्तिकारियों के हाथों मारे गये।..... अन्त में पाँच क्रान्तिकारी पकड़ लिये गये, जिन्हें बाद में फाँसी दे दी गयी। मेरठ छावनी के 12 नं0 रिसाले को 21 फरवरी को किये जाने वाले गदर के लिए पूर्णतः तैयार किया जा चुका था 19 फरवरी के बाद जमादार नादिरखान ने रिसाले के अफसरों के साथ मशविरा करके पिंगले को फसाने के लिए जाल फेंका।..... फलस्वरूप मेरठ छावनी में पहुँचकर जमादार नादिरखान ने बमों सहित पिंगले को पकड़वा दिया।

करतार सिंह सराबा, हरनाम सिंह (टुण्डीलाट) और जगत सिंह तीनों लाहौर से लायलपुर गये। रिश्तेदारों से पैसे लेकर वहाँ से पेशावर पहुँच गये। पेशावर में पठानों का वेश धारण कर वे कबाइली इलाके में चले गये। वहाँ जाकर एक विचार ने जोर मारा कि इस तरह बुजदिलों की भाँति देश से भागना ठीक नहीं है। हथियार जुटाकर साथियों को छुड़ाना चाहिए। अतः वे आपस में विचार–विमर्श कर वापस लौट आये और बाद में हथियारों की प्राप्ति के उद्देश्य से चक नं0 5 सरगोधा गये। जहाँ सिंह रिसालेदार ने 2 मार्च को तीनों को गिरफ्तार करवा दिया।[15] 25 अप्रैल 1915 ई0 को चन्दन सिंह जेलदार को दो प्रमुख क्रान्तिकारियों ने मौत के घाट उतार दिया, क्योंकि उसने प्यारा सिंह को गिरफ्तार किया था। 2 जून 1915 ई0 को सिक्खों के क्रान्तिकारी आन्दोलन का विरोध करने वाले सरदार बहादुर इच्छरासिंह को दो क्रान्तिकारियों ने जगतपुर में मार दिया। 2 अगस्त 1915 ई0 को कपूर सिंह को पड़री में मौत के घाट उतार दिया गया क्योंकि उसने झाड़ साहब में क्रान्तिकारियों के जमाव की खबर पुलिस को दी थी।[16] इसके बाद भी गदरी क्रान्तिकारियों ने आक्रमण करने की कई योजनाएँ बनायी,

लेकिन निधान सिंह चुग्धा के गिरफ्तार हो जाने से उनकी योजनाएँ सफल न हो सकी। गदर पार्टी के प्रमुख नेता व गदर आन्दोलन के संचालक रासबिहारी बोस गिरफ्तारी से बच गये। अन्त में वे जापान चले गये।

सरकार ने क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार करके उनके विरूद्ध प्रथम षड्यन्त्र केस चलाया। जिसमें 63 व्यक्ति थे। दो की मुकदमें के दौरान छोड़ दिया गया। फिर 61 में से 24 को फाँसी की सजा और 37 को कालापानी की सजा सुनाई गयी। ग्यारह के सम्बन्ध में आयोग ने दया की सिफारिस की। लेफ्टीनेण्ट गवर्नर ने काला सिंह की फाँसी की सजा को कालापानी में बदल दिया।[17] प्रथम लाहौर षड्यन्त्र केस में जन 24 स्वाधीनता सेनानियों को फाँसी की सजा सुनाई, तब सब ने न्यायाधीश का मजाक उड़ाते हुए कहा ''आपको बहुत–बहुत धन्यवाद।''

निधान सिंह ने कहा ''क्या तुम इससे अधिक सजा नही दे सकते?'' आजीवन कालापानी की सजा सुनकर पोटैटो किंग कहे जाने वाले ज्वाला सिंह ने चिल्लाकर कहा ''यह भेदभाव क्यों? तुम मुझकों भी मौत की सजा क्यों नहीं देते?[18]

सेडिशन कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार ''भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत गठित विशेष न्यायाधिकरणों ने षड्यन्त्रकारियों के नौ दलों के विरूद्ध मुकदमें चलाये।'' वास्तव में इन केसों की संख्या नौ से अधिक थी। प्रथम लाहौर षड्यन्त्र केस के अतिरिक्त दो मंडी षड्यन्त्र केस, दो वर्मा षड्यन्त्र केस, बनारस षड्यन्त्र केस, फेरुशहर हत्या केस, अनारकली हत्या केस, पाधारी हत्या केस, बल्ला पुल केस, जगतपुर हत्या केस, नांगल कला हत्या केस थिकरीवाला (गुरुदासपुर) शस्त्र केस चवरियाँ और श्री गोविन्दपुर (गुरु–दासपुर) डकैती केस भी चलाया गया।..... गदर कॉस्पिरेसी रिपोर्ट के अन्त में इसे मांगर और स्लेटरी द्वारा प्रस्तुत संक्षिप्त रिपोर्ट में लिखा गया है कि कुल 279 आव्रजकों पर मुकदमें चलाये गये, जिनमें से 46 को फाँसी 64 को आजीवन कालापानी की सजा हुई और 125 को अपेक्षाकृत कम सजाएँ दी गयी परन्तु इस रिपोर्ट से सच्ची तस्वीर सामने नहीं आती। वास्तव में सरकारी सूत्रों द्वारा प्रकट की गयी संख्या बहुत कम है। कुल मिलाकर 500 से अधिक गदर क्रांतिकारियों को फाँसी दी गयी या कालेपानी की सजा दी गयी।[19] जिन लोगों को फाँसी दी गयी उसमें प्रमुख नाम है– करतार सिंह सराबा, वी0जी0 पिगलें, पं0 काशीराम, डॉ0 मथुरा सिंह, भाई भाग सिंह, भाई वतन सिंह, मेवा सिंह, गन्ध सिंह, बलवन्त सिंह, बन्ता सिंह, रंगा सिंह, बाबू हरनाम, सोहन लाल पाठक आदि।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अयोध्या सिंह ; भारत का मुक्ति संग्राम, पृ0 251
2. अयोध्या सिंह ; भारत का मुक्ति संग्राम, पृ0 252
3. अयोध्या सिंह ; भारत का मुक्ति संग्राम, पृ0 253
4. अयोध्या सिंह ; भारत का मुक्ति संग्राम, पृ0 254
5. प्रीतम सिंह पंछी ; गदर पार्टी का इतिहास, पृ0 93
6. प्रीतम सिंह पंछी ; गदर पार्टी का इतिहास, पृ0 94
7. शचीन्द्र नाथ सान्याल ; बंदी जीवन, पृ0 53
8. शचीन्द्र नाथ सान्याल ; बंदी जीवन, पृ0 54
9. प्रीतम सिंह पंछी ; गदर पार्टी का इतिहास, पृ0 103
10. प्रीतम सिंह पंछी ; गदर पार्टी का इतिहास, पृ0 105–06
11. प्रीतम सिंह पंछी ; गदर पार्टी का इतिहास, पृ0 110–111
12. प्रीतम सिंह पंछी ; गदर पार्टी का इतिहास, पृ0 112–115
13. प्रीतम सिंह पंछी ; गदर पार्टी का इतिहास, पृ0 118
14. अयोध्या सिंह ; भारत का मुक्ति संग्राम, पृ0 354
15. प्रीतम सिंह पंछी ; गदर पार्टी का इतिहास, पृ0 123–127
16. अयोध्या सिंह ; भारत का मुक्ति संग्राम, पृ0 354
17. विश्वमिश्र उपाध्याय; विदेशों में भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन भाग–1, पृ0 343
18. विश्वमिश्र उपाध्याय; विदेशों में भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन भाग–1, पृ0 341
19. विश्वमिश्र उपाध्याय; विदेशों में भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन भाग–1, पृ0 339–340